समाज का अंधविश्वास एवं शिक्षा में वैज्ञानिक चिन्तन

डा0 सुनील कुमार
सहायक आचार्य
ए0एन0डी0टीचर्स ट्रेनिंग (पी0जी0) कालेज
सीतापुर

आज का युग विज्ञान का युग है, हर समस्या के समाधान के लिए वैज्ञानिक तकनीकी का प्रयोग हमारे समाज में हो रहा है और इस वैज्ञानिक तकनीकी की सहायता से मानव चाँद पर अपने कदम रख चुका है और अन्य ग्रहों पर पहुँचने के लिए प्रयत्नशील है। आज के मानव ने अपने मस्तिष्क का इतना विकास कर लिया है कि चाँद पर अब अंतरिम स्टेशन बना रहा है फिर भी आज संसार में जहाँ विज्ञान और तकनीकी हर क्षेत्र में व्याप्त है वहाँ यदि व्यक्ति या समाज अंधविश्वास, संकीर्णता, रूढ़िवादिता तथा पूर्वाग्रहों में जकड़ा हुआ है तो समाज की प्रगति में रूकावट पैदा हो जाती है जैसे – बिल्ली का रास्ता काट देने पर यह सोचकर घर वापस लौट जाना कि कार्य नहीं होगा। अगर आप जायेंगे नहीं तो कार्य कैसे होगा। फिर भी लोग नहीं समझ पाते कि सूचना क्रांति के दौर में हम भले ही अंतरिक्ष और चांद पर बसने की सोंच रखते हैं, लेकिन अंधविश्वास अब भी हमारा पीछा नहीं छोड़ रहा है। वैज्ञानिक युग के बढ़ते प्रभाव के बावजूद अंधविश्वास की जड़ें समाज से नहीं उखड़ रही हैं। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में जादू–टोने के नाम पर लोगों को प्रताड़ित किए जाने, आंख फोड़ने, गाँव से बाहर निकाल देने सहित कई तरह की घटनाएं आज भी बदस्तूर जारी हैं। वैसे धर्म में काफी अंधविश्वास व्याप्त है जैसे – किसी भी देवता को प्रसन्न करने के लिए जीव बलि देना। जादू–टोना करना, मंत्र–तंत्र द्वारा अपने स्वार्थ सिद्ध करना या दूसरों को नुकसान पहुँचाना आजकल तंत्र–मंत्र द्वारा ग्रह– नक्षत्र पूजा, वशीकरण, सम्मोहन, मारण ताबीज, काला जादू का प्रचलन हो गया है। ऐसे बहुत से अंधविश्वास है, जो लोक परंपरा से आते हैं जिसके पीछे कोई ठोस आधार नहीं होता।

ऐसे ढेरों विश्वास और अंधविश्वास हैं जिनमें से कुछ का धर्म में उल्लेख मिलता है और उसका कारण भी लेकिन बहुत से ऐसे विश्वास हैं, जो लोक परंपरा और स्थानीय मान्यताओं पर आधारित हैं।

भारतीय साहित्य तथा विज्ञानों के विषय में मैकाले ने कहा कि **''भारतीय धर्म ग्रन्थ अंधविश्वासों तथा मूर्खतापूर्ण तथ्यों से भरे पड़े हैं, जैसे गधे से छू जाने पर शरीर को किस तरह पवित्र करना चाहिए अथवा बकरी मारने का पाप का प्रायश्चित किन वेद मंत्रों द्वारा करना चाहिए। मैकाले ने कहा कि भारतीय अंधविश्वास में इस तरह लिप्त हैं जैसे कोई मूर्ख आदमी व्यंग्यपूर्ण कार्यों में लिप्त रहता है।''**[1]

शाब्दिक अर्थों में जाए तो अंधविश्वास का मतलब हुआ – आँखे मूंदकर कर विश्वास कर लेना या बिना जाने समझे विश्वास कर लेना, तात्पर्य निकाला जा सकता है कि विषय को जाने बिना विश्वास कर लेना – संक्षिप्त में अंधविश्वास कहलाता है, अंग्रेजी में इसे ब्लाइंड फेथ **(BlindFaith)** के नाम से जाना जाता है, सामाजिक तौर पर पुरानी विचारों से प्रभावित होकर किये जाने वाले कार्यों जिसमें कारण अज्ञात होता है, अंधविश्वास कहते हैं। जैसे कहा जाता है कि बिल्ली को मारने से पाप लगता है जिसके हाथ बिल्ली मर जाती है उसे पाप से मुक्ति के लिए बिल्ली के भार की सोने की बिल्ली दान करनी पड़ती है और इसी कारण कोई बिल्ली को मारने की कोशिश भी नहीं करता। लेकिन बात ये है कि यह सब जनता को लूटने के लिए पाखंडियों द्वारा रचा गया स्वांग है अगर किसी के हाथ से कोई बिल्ली मर जाये तो लोगों को डर लगता है कि पालन ना करने पर कोई अनहोनी ना हो जाए। अपने घर के बड़ों से पूछा सबने हामी तो भरी हाँ ऐसा ही होता है, सोने की बिल्ली दान करनी पड़ती है लेकिन क्यों? पर सभी चुप्पी साध जाते हैं। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में जादू–टोने के नाम पर लोगों को प्रताड़ित किए जाने

[1]डा0 मालती सारस्वत, भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामाजिक समस्यायें पृष्ठ संख्या–44

की बात ज्यादा आती है। ''अक्टूबर 2008 में राजस्थान के सिरोही जिले के एक गांव में निवासरत 35 वर्षीय स्त्री गुजरी देवी को ग्रामीणों ने डायन करार देते हुए खोलते हुए तेल में झोंक दिया गया। यही नहीं ग्रामीणों ने उस पर पत्थर भी बरसाये लोहे के गर्म सरिये से उसके माथे पर दाग लगाया गया। यह मामला राज्य महिला आयोग और राष्ट्रीय महिला आयोग तक भी पहुँचा लेकिन नतीजा सिफर रहा।''[1]

सरकार ने जादू–टोने के नाम पर होने वाले लोगों को न्याय दिलाने के लिए टोना प्रताड़ना अधिनियम 2005 लागू किया है, मगर अधिनियम के कायदे और कानून महज किताबों तक ही सीमित है कानून लागू होने के कई साल बाद भी लोग उसे मानने को बिल्कुल तैयार नहीं हो रहे हैं। अंधविश्वास के नाम पर महिलाओं के प्रति बर्बरता में निरन्तर वृद्धि चिंताजनक है। छत्तीसगढ़ राज्य के अलावा, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, मध्य–प्रदेश, असम, गुजरात, झारखण्ड और बिहार की बात की जाए, तो इन राज्यों में डायन घोषित कर महिला के मार डालना आम बात है। ऐसी घटनाएं समूचे ग्रामीणों के सामने घटती हैं, लेकिन इनमें सबकी मौन सहमति होती है। इस वजह से कोई कानूनी कार्यवाही नहीं हो पाती और इसी तरह मासूम औरतों की जिन्दगी को खत्म कर दिया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा वर्ष 2003 में जारी एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में सन् 1987 से लेकर 2003 तक 2556 महिलाओं को डायन घोषित करके मौत के घाट उतार दिया गया। वर्तमान में छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में टोनही प्रताड़ना के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। कमोबेश जादू–टोना के नाम पर शहरों में भी लोगों को प्रताड़ित किए जाने की घटनाएं कुछ कम नहीं हैं इसका प्रत्यक्ष उदाहरण जल्द ही 20 मई को बलौदा बाजार इलाका सौरा गाँव में उस समय सामने आया जब कुछ लोगों ने टोनही का इल्जाम लगाते हुए एक महिला और उसके पति की आँख फोड़ दी। वर्तमान में अंधश्रृद्धा के कारण समाज में उत्पन होने वाली चुनौतियाँ और दुष्परिणामों के रोकथाम के लिए कई तरह के कानूनी प्रावधान भी लागू हैं यथा–औषधि और जादू उपचार (आपत्तिजनक विज्ञान) अधिनियम–1955, भारतीय दंड संहिता (धारा 420 एवं अन्य), छत्तीसगढ़ में विशेष तौर पर टोनही प्रताड़ना निवारण अधिनियम 2005 आदि। निष्कर्ष यही है कि ऐसे अंधविश्वास न केवल निराधार एवं अवैज्ञानिक है बल्कि ये कई तरह के अवैधानिक, अमानवीय अपराधों के कारण भी हैं। अंधविश्वास सामाजिक कैंसर है अंधविश्वास की बुनियादी विशेषता है, अंधानुकरण, वैज्ञानिक विवेक का त्याग और स्वतंत्र चिंतन का विरोध। सामाजिक जीवन में इसका लक्ष्य था आम लोगों को अपने श्रेष्ठजनों के किसी भी आदेश के पालन का अभ्यस्त बनाया जाए। दूसरा वे उन्हीं पर भरोसा करना सीखें जो हर मामले में समान भाव से धार्मिक विधि विधानों का पालन करते हैं।''[2]

अंधविश्वास एवं अध्यात्म :–

मनुष्य अनेक क्रियाओं और घटनाओं के कारणों को नहीं जान पाता था। वह अज्ञानवश समझता था कि इनके पीछे कोई अदृश्य शक्ति है। ईश्वरीय प्रकोप अज्ञात तथा अज्ञेय देव, भूत, प्रेत और पिशाचों के प्रकोप के परिणाम माने जाते थे। ज्ञान का प्रकाश हो जाने पर भी ऐसे विचार विलीन नहीं हुए, प्रत्युत ये अंधविश्वास माने जाने लगे। आदिकाल में मनुष्य का क्रिया क्षेत्र संकुचित था इसलिए अंधविश्वासों की संख्या भी अल्प थी। ज्यों–ज्यों मनुष्य की क्रियाओं का विकास हुआ त्यों–त्यों अंधविश्वासों का जाल भी फैलता गया और इनके अनेक भेद हो गये। अंधविश्वास सार्वदेशिक और सार्वकालिक हैं। विज्ञान के प्रकाश में ये छिपे रहते हैं।

समाज के कई लोग आज भी मानते हैं कि पृथ्वी शेषनाग पर स्थित है, वर्षा गर्जन और बिजली इंद्र की क्रियाएँ है, भूकम्प की अधिष्ठाती एक देवी है, रोगों के कारण प्रेत और पिशाच हैं इस प्रकार के अंधविश्वास को प्राव्वैज्ञानिक या धार्मिक अंधविश्वास कहा जाता है। अंधविश्वास का दूसरा बड़ा वर्ग है तंत्र–मंत्र इसमें रोग निवारण, वशीकरण उच्चाटन मारण आदि विविध उद्देश्यों के पूर्ती हेतु मंत्र प्रयोग प्राचीन तथा मध्य काल में सर्वत्र प्रचलित था। मंत्र द्वारा रोग निवारण अनेक लोगों का व्यवसाय था।

[1]अंधविश्वास विकिपीडिया ब्लाग नं01 23 सितम्बर 2011

[2] www.andhvishwasjagranjunction.com, blog no.1 23 may 2011

विरोधी और उदासीन व्यक्ति को अपने वश में करना, दूसरों के वश में करवाना मंत्र द्वारा सम्भव माना जाता था। उच्चारण और मारण भी मंत्र के विषय थे। जादू–टोना, शकुन, मुहुर्त, मणि ताबीज आदि अंधविश्वास की संतति है। इन सबके अंतस्थल में कुछ धार्मिक भाव हैं परन्तु इन भावों का विश्लेषण करना कठिन है। इनमें तर्कशून्य विश्वास है। मध्य युग में यह विश्वास प्रचलित था कि ऐसा कोई काम नहीं है जो मंत्र द्वारा सिद्ध न हो सकता हो। असफलताएँ अपवाद मानी जाती थीं। इसलिए कृषि रक्षा, दुर्ग रक्षा, रोग निवारण, संतविलाभ, शत्रु विनाश, आयु वृद्धि आदि के हेतु मंत्र प्रयोग, जादू–टोना, मुहुर्त और मणि का प्रयोग भी प्रचलित था। मणि योगनी, शाकिनी और डाकिनी सम्बन्धी विश्वास भी अंध–विश्वास का ही विस्तार था। ऐसे ही अंधविश्वासों ने रूढ़ियों का भी रूप धारण कर लिया था। यह सब देखकर लोगों में शिक्षा का अभाव खलने लगता है जब आस–पास के लोग अपने सुखी जीवन में तरह–तरह के टोटके के जरिये अपने दुख को दूर करने पर आमादा हो जाते हैं और बदले में अपने दुख में अभूतपूर्व इजाफा कर बैठते हैं। मेहनत की कमाई को खाने–पहनने, शिक्षा और दवा दारू के बजाय घूर्तों के पाखण्ड पर व्यय कर देते हैं। हमारे समाज में देखने को मिलता है गणेश पूजा में कईयों के सिर पर गणेश जी सवार हो जाते हैं तो नवरात्रि में दुर्गा जी खुद आकर ना जाने कितनों के पवित्र शरीर में डेरा डाल देती हैं। कहीं से घूमते–घूमते कोई औंघड़ी बाबा का दर्शन हो गया तो पूरा इलाका धन्य हो जाता है और महीनों तक उनका असर लोगों पर छाया रहता है।[1]

विज्ञान और तर्क :–

विज्ञान वह व्यवस्थित ज्ञान व विद्या है जो विचार, अवलोकन, अध्ययन और प्रयोग से मिलती है, जो कि किसी भी क्षेत्र में अध्ययन की प्रकृति या सिद्धान्तों को जानने के लिए किये जाते हैं। विज्ञान का प्रयोग ज्ञान एवं तर्क के द्वारा तथ्य सिद्धान्त और तरीकों को प्रयोग और परिकल्पना से स्थापित और व्यवस्थित करती है। इस प्रकार कह सकते है कि किसी भी विषय या क्षेत्र का तर्क युक्त क्रमबद्ध ज्ञान को विज्ञान कहते हैं। विज्ञान कुछ ऐसी विधाओं का समूह है जो दर्शन और विज्ञान के विषयों पर तर्क और गणना के सिद्धान्त का अनुप्रयोग करते हैं। विज्ञान प्रकृति का विशेष ज्ञान है विज्ञान का मुख्य ध्येय किसी भी चीज के बारे में तर्क–वितर्क के द्वारा तथा उस पर कुछ प्रयोग करके उस पर सावधानी पूर्वक निरीक्षण किया जाय ताकि उस क्षेत्र सही स्पष्ट जानकारी मिल सके। विज्ञान में तर्क का बहुत बड़ा महत्व है बिना तर्क युक्त ज्ञान के विज्ञान अधूरा है विज्ञान के द्वारा प्रयोग करने का एक मात्र उद्देश्य प्रकृति के किसी रहस्य का उद्घाटन होता है कोई घटना क्यों और कैसे घटित होती है जैसे वर्षा क्यों होती है, इन्द्रधनुष कैसे बनता है इसको विज्ञान के तर्क एवं प्रयोगों के द्वारा समझना पड़ता है। विज्ञान के द्वारा तर्क का तात्पर्य किसी सत्यापनार्थ विचार से है। किसी बहस अथवा विचार विमर्श किसी भी युक्ति को तर्क–वितर्क कहा जा सकता है किन्तु इसका उचित उपयोग विचार के वैज्ञानिक आधार में है। तर्क विज्ञान का क्षेत्र चाहे कोई भी हो चाहे अंधविश्वास ही हो वो पूरा तर्क पर ही निर्भर है जिसमें क्या, क्यों और कैसे का जवाब ढूँढा जाता है।

आज का युग विज्ञान का युग है हर समस्या के समाधान के लिए वैज्ञानिक तकनीकी तथा पद्धति का प्रयोग हो रहा है। इसके बावजूद भी लोग अंधविश्वास के अंधेरे में जकड़े हुए है। पहले से ही विश्वास हमारे देश के सामाजिक व्यवस्था में कोढ़ की तरह व्याप्त है। अंधविश्वास एक इंसान को नहीं पूरे समाज व देश को खोखला कर रहा है। मानव को अंधविश्वास ने अपने आगोश में इस तरह जकड़ रखा है व व्यक्ति किस हद तक नीचे गिर सकता है उसकी सीमा नहीं। दुनिया भर को अंधविश्वास ने बहुत पीड़ाएं दी हैं क्योंकि अंधविश्वास की शुरूवात तर्करहित विश्वासों से होती है। इसका प्रमाणित होना जरूरी नहीं माना जाता है। अंधविश्वास के कारण अशिक्षा और अज्ञानता तथा मानवीय जानकारी एवं

[1]दर्शनकोश, प्रगति प्रकाशन, मास्को, 1980, पृष्ठ सं0–5,6

मानवीय शक्ति की सीमाएं रहीं हैं। जब व्यक्ति को कोई बीमारी हो जाती है उसके बारे में कोई जानकारी नहीं होती तथा चिकित्सीय सुविधाएं उपलब्ध नहीं हो पाती। तब वह उसे भूतीय प्रकोप मान लेता है और कुछ लोग आस्था–अनास्था के इस पचड़े से गूथें देवी–पूजा के जरिए निदान निकालना चाहते हैं। इसके चक्कर में कितने लोगों को जीव बलि, नर बलि जैसे घिनौने काम करने पड़ते हैं कई बार घटनाओं के सामान्यीकरण से भी आम लोगों के मष्तिष्क में अंधविश्वासों की गहरी पैठ बन जाती है। जैसे कभी किसी एक व्यक्ति के सामने से एक बिल्ली अगर गुजर जाये और बाद में उसके साथ कोई दुर्घटना हो जाए तो बिल्ली का रास्ता काटा जाना अशुभ माने जाना लगा। यह घटना इतनी व्यापक रूप से फैली हुई है कि आज भी अगर बिल्ली रास्ता काट दे तो व्यक्ति खड़ा हो जाता है कि कोई दूसरा व्यक्ति निकल जाये यानी दुर्घटना का शिकार अन्य व्यक्ति हो जाए। ऐसी सोच अंधविश्वास के साथ–साथ स्वार्थपरक भी होती है। इसी प्रकार हमारे समाज में अगर कोई व्यक्ति काना है मतलब एक आँख खराब है तो उसे अशुभ माना जाता है। इस तरह की सोच असंगत है। हजारों वर्षों से चली आज रही परंपराओं के कारण धर्म में विश्वास–अंधविश्वास बन गये हैं। हमारे धर्म में पशु बलि प्रथा में देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बलि का प्रयोग किया जाता है क्या बलि देने से देवता प्रसन्न होंगे कभी नहीं फिर भी अंधविश्वास लोगों के मन में व्याप्त है ज्यादातर पिछड़े इलाकों में जब लोगों की तबियत खराब होती है तो डाक्टर को दिखाने के बजाय ओझा और तांत्रिक को दिखाना ज्यादा पसन्द करते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अंधविश्वास में सम्बन्ध :–

हम विज्ञान और अंधविश्वास की बात करते हैं तो उसमें सह–सम्बन्ध जोड़ते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण के द्वारा अंधविश्वास की बातों को नकारते हुए सही वैज्ञानिक विश्लेषण की बात करते हैं। हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण और अंधविश्वास दोनों का मूल सामग्री का विश्लेषण करते हुए विज्ञान कारण, तर्क के द्वारा अंधविश्वास पर व्याप्त विश्वास को समाप्त कर सकते हैं। विज्ञान और अंधविश्वास दोनों स्पष्ट रूप से विपरीत हैं, हालांकि तथ्य की विडंबना विज्ञान भी कुछ हद तक सुलझाने में असफल है। हम लोग मानते हैं कि गंगा में डुबकी लगाने से हमारे पापों के प्रभाव से छुटकारा मिल सकता है पर हम विश्वास करने लगते हैं। यह किसी भी तर्क के द्वारा समझाया नहीं जा सकता है यह विश्वास का मामला है अंधविश्वास हमारे मानसिक दृष्टिकोण हमारी सोंच की प्रक्रिया पर अभी भी एक पकड़ है जिसे सिर्फ वैज्ञानिक दृष्टिकोण के द्वारा ही दूर किया जा सकता है। कुछ ऐसे अनुभव होते हैं जो मानव बुद्धि को समझ नहीं आते और इसी न समझ आने वाली बात को लोग दैवीय शक्ति या अंधविश्वास मान लेते हैं लेकिन इस भ्रम को दूर करने का कार्य–विज्ञान के प्रयोगों तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के सोंच से दूर किया जाता है।

जब हमें कार्यकारण में सम्बन्धों का स्पष्ट पता चल जाता है तो वह ज्ञान विज्ञान की श्रेणी में चला जाता है। किसी वस्तु का तथ्य परक ज्ञान भी विज्ञान का ही एक अंग है। अनादि काल से ही हमारे समाज में अनेक प्रकार की मान्यताओं का समावेश रहा है। धीरे–धीरे समय में परिवर्तन हुआ और इन मान्यताओं का खण्डन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया गया। जिससे हमारे समाज में मान्यताओं और आस्थाओं के कारण हो रहे अंधविश्वासी कार्यों में कुछ कमी आई है। धार्मिक मान्यताओं और अंधविश्वास से घिरे हुए लोगों पर सम्यक् चिन्तक करना आज के युग में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के द्वारा उनका समाधान करना अत्यन्त आवश्यक हो चुका है। समाज में अंधविश्वास पर उठते सवाल कई हैं जिसके ढूंढने का प्रयास कम ही लोग करते हैं और जो नहीं करते वे किसी भी बात को अंधभक्त बनकर माने चले जाते हैं चाहे वो उनके लिए कितना भी हानिकारक हो।

''डी0 सी0 डा0 प्रवीण शंकर ने कहा कि विज्ञान से ही अंधविश्वास को दूर किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि विज्ञान को घर–घर तथा गाँव तक पहुँचाने की जरूरत है। आज चन्द्रग्रहण के बाद

लोग स्नान आदि करते हैं। यह अंधविश्वास का ही हिस्सा है। अंधविश्वास को मिटाने के लिए छात्र वैज्ञानिकों की भागीदारी अति आवश्यक है।''[1]

अंधविश्वास बढ़ने के पीछे सबसे बड़ा कारण शिक्षा की कमी है लेकिन कई बार तंत्र विद्या पर विश्वास करने वाला शिक्षित वर्ग भी नजर आता है। लेकिन हमारे समाज में एक अजीब विरोधाभास दिखाई दे रहा है। एक तरफ विज्ञान और टेक्नोलाजी की उपलब्धियों का तेजी से प्रसार हो रहा है तो दूसरी तरफ जनमानस में वैज्ञानिक नजरिये के बजाय अंधविश्वास, कट्टरपंथ, पोगापंथ, रूढ़ियां और परम्पराएँ तेजी से पाँव पसार रही हैं। हमारे देश के कई लोगों तक ज्ञान–विज्ञान की रोशनी अब तक नहीं पहुँच पायी है। ऐसे में समाज के अधिकांश लोगों में वैज्ञानिक नजरिये का अभाव कोई आश्चर्य की बात नहीं। लेकिन जिन लोगों को ज्ञान विज्ञान की जानकारी उसकी उपलब्धियाँ हासिल हैं, वे वैज्ञानिक नजरिया अपनाते हो, तर्कशील हो विवेकी हो यह जरूरी नहीं। विज्ञान की जीत के मौजूदा दौर में यदि वैज्ञानिक नजरिया लोगों की जिन्दगी का चालक नहीं बन पाता तो इसके पीछे कई कारण हैं। समाज में व्याप्त अंधविश्वास के पीछे अज्ञान के अलावा, अज्ञात का भय, अनिश्चित भविष्य, समस्या का सही समाधान होते हुए भी लोगों की पहुँच से बाहर होना, समाज में कट जाने का भय। यह उसका अज्ञान तथा वैज्ञानिक नजरिये का अभाव है।

''पन्द्रहवी शताब्दी में यूरोप के पुनर्जागरण काल में ज्ञान–विज्ञान की नये–नये विचार फूटने शुरू हुई। गैलीलियों, कापरनिकस और ब्रूनों जैसे अनेक वैज्ञानिकों ने धार्मिक मतों पर प्रश्न खड़ा किया और वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा लोगों को यह बताया कि संसार और प्रकृति के बारे में धार्मिक मान्यताएँ गलत है।''[2]

होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र 2010, के अनुसार 'भारत में सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी क्षेत्र में हुई तरक्की से जीवन का हर क्षेत्र प्रभावित हुआ है। देश में इलेक्ट्रानिक माध्यमों का दायरा तथा प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है, तथा इंटरनेट सेवाओं का तेजी से विस्तार हो रहा है शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। बेहतर शिक्षण, प्रशिक्षण तथा अधिनियम के लिए शैक्षिक ई–सामग्री आज बहुत उपयोगी साबित हो रही है तथा आने वाले समय में उपयोगिता तथा उपादेयता बढ़ेगी। दृश्य श्रव्य माध्यमों तथा ऐनिमेशन तकनीकी द्वारा शैक्षिक सामग्री बेहतर तरीके से छात्रों, अध्यापकों, प्रशिक्षकों तथा आम जनमानस तक पहुँचायी जा सकती है जिससे मानव के वैज्ञानिक दृष्टिकोण में इन संचार माध्यमों से अति वृद्धि हुयी है।'[3]

घोष (1986), ने विद्यार्थियों की अभिक्षमता और वैज्ञानिक अभिवृत्ति का आलोचनात्मक अध्ययन किया तथा अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की मात्रा अधिक थी। जिन विद्यार्थियों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण अधिक था उनमें वैज्ञानिक अभिक्षमता भी अधिक थी।

दत्त प्रसाद दाभोलकर, 1991 पुस्तक विज्ञानेश्वरी में, वैज्ञानिक तथ्यों की कलात्मक माध्यम से प्रसार की प्रगति के प्रति उत्सुकता बढ़ाने में इस विधा का विशेष महत्व है। विशेष रूप से नवयुवकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रति समझ–बूझ और जागरूकता बढ़ाने के लिए यह अत्यन्त उपयोगी है। हमारे देश की विभिन्न भाषाओं में इस विधा का निरन्तर विकास हो रहा है लेखक ने विज्ञान के प्रयोगों को विशेष महत्व दिया है तथा किसी भी तथ्य को विज्ञान के सहारे प्रयोगों के द्वारा उस तथ्य के सत्यता तक जाया जाता है विज्ञान सिद्ध करके दिखाता है कि तथ्य में कितनी सत्यता तथा असत्यता है। लेखक के

[1] www.jagran.com, 28-10-2013 blog no.1

[2]अंधविश्वास तथा विज्ञान ब्लाग नं02

[3]जागरण संवाददाता, ऋषिकेश : 28 अक्टूबर 2013

अनुसार मानव विज्ञान युग में विज्ञान के प्रयोगों के द्वारा सबसे ताकतवर प्राणी है इन्होंने कहानियों के माध्ययम से वैज्ञानिक दृष्टिकोण को उत्पन्न करने की कोशिश की है।

रवि राठौर के ब्लाग अंधविश्वास, 06 फरवरी, 2014 में, अंधविश्वास के प्रति व्याप्त कुरीतियों को खत्म करने के लिए मीडिया को समाज में जागरूकता फैलाने और साक्षरता का प्रचार प्रसार करने की भूमिका के रूप में देखा जाता है, लेकिन वर्तमान समय में मीडिया अपनी इस भूमिका का कितना निर्वहन कर रहा है ये हम सब जानते हैं, कोई भी टीवी चैनल चला लें डरावना सा रूप धारण किये हुए बाबा दर्शकों को शनि, राहु, केतु, गृह दोष, मंगल दोष और ना जाने कैसे–कैसे दोषों से डराते हुए और लौकेट धन लक्ष्मी वर्षा यन्त्र, लक्ष्मी कुबेर यंत्र, इच्छापूर्ति कछुआ, लाल किताब, गणपति पेंडेंट, नजर रक्षा कवच आदि की दुकान लगा कर बैठे मिल जायेंगे। आज हर आदमी किसी ना किसी समस्या से जूझ रहा है। बस इसी बात का फायदा उठाकर अंधविश्वास की अपनी दुकान चलाने के लिए मीडिया का सहारा लिया जा रहा है क्योंकि मीडिया एक ऐसा माध्यम है जिसके जरिये कोई भी बात सीधे–सीधे लाखों, करोड़ों लोगों तक पहुँचाई जा सकती है लेखक ने इन बातों को जोर देते हुए कहा कि प्यार में असफल व्यक्ति को कोई ज्योतिष या तांत्रिक उसका प्यार कैसे दिला सकता है? तांत्रिक के उपाय अपनाने पर संतान मिल जाती है तो फिर मेडिकल की पढ़ाई की क्या जरूरत है? अगर कोई व्यक्ति यन्त्र खरीदकर रातों रात अमीर बन सकता है तो आफिस में सुबह से शाम तक सर खपाने की क्या जरूरत है? कुल मिलाकर दुखी हारे हुए परेशान लोगों को ठगने का एक बड़ा जाल फैलाया जा चुका है जिसकी चपेट में फंसकर लोग अपने को लुटवा रहे है। लेखक ने अपने वक्तव्य में अंधविश्वास व मीडिया के बारे में बखूबी बयां किया है।

डा0 दिनेश मिश्र 6 फरवरी 2012, के द्वारा ''अंधविश्वास एवं मानवाधिकार'' ब्लाग में अंधविश्वास के द्वारा हो रही घटनाओं से हो रहे मौलिक अधिकारों का हनन रोकने का प्रयास किया है। बहुत समय पहले प्राकृतिक घटनाओं जैसे सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, भूकम्प मनुष्य व पशुओं को होने वाली महामारी के सम्बन्ध में कोई वास्तविक जानकारी नहीं थी। इन आपदाओं के पूर्वानुमान लगाने, महामारी से बचाव व नियंत्रण के साधन ज्ञात नहीं थे। तब इन्हें जादू–टोने से ज्ञात या दूर किया जाता था। आज के समय में इन सभी घटनाओं के वैज्ञानिक तर्क मौजूद हैं, सभी प्रकार के बीमारियों के लिए यंत्र तथा दवा उपलब्ध है, फिर भी हमारा समाज उसी अंधविश्वास पर अब भी चल रहा है। लेखक ने इस पक्ष पर ज्यादा जोर देते हुए कहा है कि अंधविश्वास के द्वारा हो रही बुरी घटनायें जिसमें मनुष्य अपने जन, धन की हानि करवा बैठता है। उन अंधविश्वास व कुरीतियों, सामाजिक विषमताओं के कारण हनन होने वाले मानव अधिकारों के सूची में बहुत से मामले हैं पर आवश्यकता है आम लोगों को उनके अधिकारों के सम्बन्ध में बताने की, उनको जागरूक करने, उनके अधिकारों के संरक्षण का माहौल बनाने की ताकि किसी भी व्यक्ति के मौलिक अधिकारों का हनन न हो। सभी मानव अंधविश्वास के प्रति जागरूक हों तथा दूसरों को जागरूक करें तथा समानता का जीवन जियें।[1]

आधुनिक युग विज्ञान का युग है, विज्ञान के द्वारा ही समाज व देश को विकासशील से विकसित बनाया जा सकता है और यह सम्भव है विज्ञान की शिक्षा के द्वारा जो हमें अनसुलझे तथ्य पर तर्क करने की क्षमता प्रदान करती है। इस युग में हमारे आर्थिक ओर सामाजिक जीवन में अनुसंधान का विशेष महत्व है समाज और राष्ट्र की प्रगति को शोध के परिणामों द्वारा पहचाना जाता है क्योंकि समाज और राष्ट्र की मूल समस्याओं का समाधान शोध कार्य द्वारा किया जाता है। शोध कार्यों द्वारा ज्ञान वृद्धि के साथ–साथ मानव विकास तथा कल्याण को महत्व दिया जाता है।

विद्यार्थियों को विज्ञान के शिक्षा तथा प्रयोगों, तर्कों के द्वारा उनके मन में बैठे अंधविश्वास को प्रयोगों द्वारा समझा कर दूर किया जा सकता है। आज पूरी दुनिया में विज्ञान की पताका लहरा रही है

[1]डा0 दिनेश मिश्र, अंधविश्वास एवं मानव अधिकार 28 जनवरी 2014

जीवन तथा विज्ञान एक दूसरे के पर्याय बन गये हैं विज्ञान से मानव को असीमित शक्ति प्राप्ति हुई है फिर भी अगर उनमें अंधविश्वास व्याप्त है तो वो हमारे समाज की कहीं ना कहीं कमी है जिसे शिक्षा के अनुप्रयोगों के द्वारा ही दूर किया जा सकता है।

विज्ञान शिक्षण को समाज में व्याप्त कुरीतियों से जोड़ते हुए उनके तर्क–वितर्क तथा प्रयोगों के द्वारा सत्यता तक जाना चाहिए जिससे समाज में व्याप्त अंधविश्वास दूर हो सके तथा विद्यार्थी विज्ञान की शिक्षा के द्वारा प्रकृति की विभिन्न घटनाओं तथा समस्याओं को आसानी से समझकर सफल हो सके। समस्याओं का हल खोजने के लिए प्राप्त ज्ञान के आधार पर उपकल्पना का निर्माण कर सकें। इस प्रकार शोध कार्यों से विद्यार्थियों तथा समाज के मन में व्याप्त अंधविश्वास के प्रति लगाव को विज्ञान की शिक्षा के द्वारा दूर किया जा सकता। ऐसे परिवार जो अपने बच्चों को पुराने अंधविश्वासों, रीति–रीवाजों व परम्पराओं पर ही अपने बच्चों की चलने को कहते हैं और उसमें भी ज्यादातर बालिकाओं को कहा जाता है। इन सब मान्यताओं को शिक्षा के द्वारा ही दूर किया जा सकता है और माता–पिता या परिवार वालों तक यह ज्ञान पहुँचाना होगा कि आँख मूंदकर किसी बात पर विश्वास न करें, उस पर अमल करें तथा उन्हें जागरूक करने की जरूरत है। जिससे अभिभावकों के माध्यम से बालक–बालिकाओं तक ज्ञान पहुँचाने के लिए समय–समय पर नाटक मंच द्वारा, सेमिनार द्वारा, कालेज मीटिंग के द्वारा उन्हें जागरूक किया जा सकता है।

हमारे समाज में अंधविश्वास के चलते जीव हत्या, नर–बलि, डायन घोषित करने जैसे अनेक समस्यायें व्याप्त हैं। कुछ ढोंगी बाबा जो पैसे के लिए भोले–भाले नागरिकों को अपने जाल में फंसाकर कर उनके ऐसे घिनौने कार्य करवाते है जिसमें ज्यादातर गरीब लोग होते हैं जो अशिक्षित होते हैं और अशिक्षित होने के कारण से ही ये ऐसे ढोंगी बाबाओं के चक्कर में आ जाते हैं और अपनी तथा दूसरों तक की जान गवां बैठते हैं। इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों जो अभिभावक अशिक्षित हैं उन्हें प्रौढ़ शिक्षा के द्वारा शिक्षित किया जाये तथा अंधविश्वास के बारे में ज्ञान प्रदान किया जाये।

इस समय कई चर्चित व्यक्ति हैं जो पैसों के बदले लोगों को आर्शीवाद देकर उनके कष्ट दूर करते हैं। उनके यहाँ अशिक्षित वर्ग ही नहीं शिक्षित वर्ग बहुत अधिक संख्या में जा रहे हैं, बिना औलाद वालों को औलाद दिलाते हैं, बिगड़े हुए कामों को बनाते हैं, एक ही दिन में अमीर बनाते हैं, अगर ये सब उनके आर्शीवाद से हो रहा है तो आज चिकित्सा के क्षेत्र में हो रहे अनुसंधान सब बेकार, एक दिन में अमीर बना रहे हैं तो कोई कार्य करने की जरूरत नहीं हमारे समाज में ऐसे बाबाओं का आज भी प्रभाव लोगों पर है और ये कहीं ना कहीं शिक्षा में हो रही कमी के कारणों से है कि उन्हें आज तक ऐसी सही शिक्षा ही न मिली है। अगर ऐसे बाबाओं के आर्शीवाद से बीमारियाँ, दूर हो जा रही हैं, आदमी रातों रात अमीर हो जा रहा है तो बीमारियों के लिए दवा की जरूरत नहीं, चिकित्सा में हो रहे प्रयोगों की जरूरत नहीं, मनुष्य को कोई कार्य करने की जरूरत नहीं उनका आर्शीवाद ले और अमीर बन जाये। अभी हाल में ही एक ऐसे बाबा का खुलासा हुआ जिसको लोगों ने अंधविश्वास के चलते ईश्वर तक की संज्ञा दे दी थी। इन्होंने अंधविश्वास के चलते लोगों को अपने कब्जे में करकर उनके साथ घिनौने कार्य किये।

अंधविश्वास को दूर करने का सबसे अहम रोल परिवार तथा अध्यापकों को जाता है जो छात्र तथा छात्राओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न कर अंधविश्वास के प्रति नकारात्मक सोच उत्पन करें तथा उनमें प्रयोगों द्वारा शिक्षा के द्वारा अंधविश्वासी बातों को गलत साबित करके उन्हें दिखाये और यह सब कार्य सही शिक्षा के द्वारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करके सम्भव किया जा सकता है।

***

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सारस्वत, मालती, भारतीय शिक्षा का विकास एवं समाजिक समस्याएँ, आलोक एंव गौतम प्रकाशन, लखनऊ, 2008
2. मास्को – ''दर्शन कोष'' प्रगति प्रकाशन, 1980
3. गुप्ता, एस0पी0 ''आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्याएँ, साहित्य प्रकाशन आगरा, 2001
4. पाण्डेय, राम सकल – ''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक'' भार्गव प्रकाशन आगरा, 2005

पत्रिकाएँ :–

- ❖ अमर उजाला, सीतापुर 9 फरवरी 2014
- ❖ कश्यप, संतोष कुमार – शिक्षक प्रभा, 5 जुलाई 2014
- ❖ लोक कल्याण सेतु, अप्रैल 2011

Website -

www.andhviswas.com

www.andhviswasdainicjagran.com

www.jagran.com